अध्याय - 5

शिल्प एवं उद्योग

भारत एक कृषि प्रधान देश है, परंतु यह शिल्प एवं उद्योग के क्षेत्र में भी विश्व में अग्रणी रहा है। भारत में शिल्प एवं उद्योग अंग्रेजी शासन से पहले काफी विकसित अवस्था में था। यहाँ का प्रमुख उद्योग—वस्त्र उद्योग था। मुगलों के शासन काल में यहाँ से एशिया और यूरोप के देशों में वस्त्र निर्यात किया जाता था। विशेषकर ढ़ाके की मलमल, बंगाल एवं लखनऊ की छींट, अहमदाबाद की धोतियाँ एवं दुपट्टे, नागपुर तथा मुर्शिदाबाद के रेशमी किनारी वाले कपड़े एवं कुछ अन्य सूती वस्त्र का निर्यात बड़ी मात्रा में होता था। इसके बदले सोने एवं चाँदी का आयात होता था। उपभोग की बहुत ही कम वस्तुएँ आयात की जाती थीं जैसे ऊनी कपड़ा, तांबा, लोहा और कागज। एशिया के देशों में चीन से चाय, चीनी मिट्टी के बर्तन, इंडोनेशिया से मसाले तथा इत्र एवं अरब से कहवा, खजूर और शहद आदि का आयात किया जाता था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय शिल्प एवं उद्योग की स्थिति खराब होने लगी। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद राजनैतिक अस्थिरता और विदेशी आक्रमणों तथा यूरोपीय व्यापारियों के आगमन ने भारतीय व्यापारियों को नुकसान पहुँचाया। कई क्षेत्रीय शासकों ने अपने राज्य की सीमा में प्रवेश करने वाले व्यापारियों पर अधिक कर लगा दिया, जिससे व्यापार में गिरावट आने लगी, इसका उत्पादन पर भी बुरा असर पड़ा। फिर भी भारतीय बुनकरों एवं दस्तकारों की दक्षता का कोई जोड़ नहीं था। उस समय कपड़ा उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे— बंगाल में ढाका, गुजरात में अहमदाबाद, सूरत और भड़ौच, उत्तर प्रदेश में लखनऊ, बनारस, जौनपुर और आगरा, कर्नाटक में बंगलोर, तमिलनाडू में कोयम्बटूर एवं मदुरै तथा आंध्रप्रेदश में विशाखापत्तनम और मछलीपट्टम। कश्मीर ऊनी वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था। इन उद्योग की उन्नति के कारण सभी औद्योगिक केन्द्र नगर बन गए, जिसके विषय में आप अध्याय 10 में आगे पढेंगे।

Developed by: ABSOL www.absol.in

भारत की शिल्पकला एवं औद्योगिक समृद्धि को देखकर यूरोप की कई व्यापारिक कंपनियाँ व्यापार के लिए आने लगीं। अध्याय–2 में आपने पढ़ा है कि सबसे पहले पुर्त्तगालियों ने कालीकट में अपनी कोठियाँ स्थापित की। इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ ने भी ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की। इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में बहुमूल्य वस्तुएं लाती थी और उसके बदले कपड़े, मसाले आदि भारत से ले जाकर विदेशों में बेचती थी। इस तरह अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक यूरोप, भारत में तैयार वस्तुओं का खरीददार था, परंतु भारत के आर्थिक समृद्धि का प्रधान कारण सूती कपड़ा का हथकरघा उद्योग था।

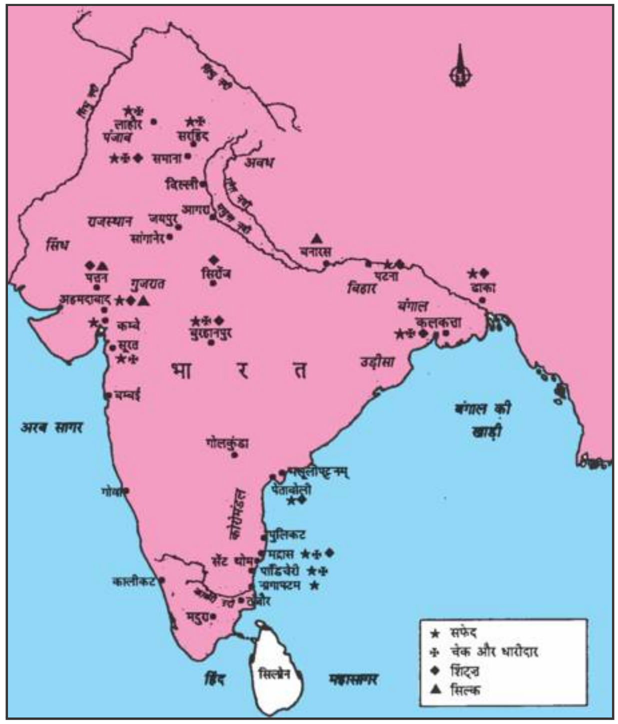

fp= 1 & vBkjgoh 'krkCnh esa Hkkjr esa cukbZ dh iez[k dUæ

Ikygoh 'krkCnh es iÙkxfy;k dk 0;kikj IoiFke dkyhdV I 'k: gvk] bIhfy, mUgksus Irh diMk dk ^dfydk* uke fn;kA bIh rjg ckjhd Irh diMk dk ;jki d ykxk u IoçFke vjc 0;kikfj;k d ikI bjkd d ^ekIy* uked 'kgj e n[kk Fkk] ftIdh otg I ckjhd cukbZ oky IHkh Irh diMk dk mUgksus ^eIfyu* uke fn;kA bI IenHk e Hkkjrh; dkjhxjk d dk'ky dk vuqeku bIh I yx;k tk Idrk g fd ^^chI xt yEc vkj ,d xt pkM cf<;k eyey d VdM dk ,d vxBh e I fudkyk tk Idrk Fkk vkj bI cuku e N% eghu Ie; yxrk FkkA**

यूरोप का शिल्प उद्योग भारतीय शिल्प–उद्योग के साथ प्रतियोगिता करने में सफल नहीं हो पा रहा था। अतः अपने उद्योग को बढ़ावा देने के लिए इंगलैंड ने सन् 1720 ई० में कैलिको अधिनियम बनाया। इसके अनुसार इंगलैंड में भारत के बने छापेदार सूती कपड़े और छींट के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी गयी और उनके आयात को इंगलैंड में रोक दिया गया।

इसी समय वहाँ तकनीकी विकास की आवश्यकता महसूस की गयी। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए आविष्कारों ने, उद्योग के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी क्रांति ला दी, जिसके विषय में आप अध्याय–1 में पढ़ चुके हैं। इस क्रांति के कारण अधिक उत्पादन सभी क्षेत्रों में संभव हो सका। अब ज्यादा कपड़ा बहुत कम कीमत पर इंगलैड में तैयार होने लगा। मैनचेस्टर एवं लंकाशायर वस्त्र उद्योग के बड़े केन्द्र बन गए।

इसके बावजूद भी भारतीय कपड़ों की मांग यूरोप के बाजार में बहुत अधिक थी। उन्नीसवीं शताब्दी में सूरत एवं अहमदाबाद में पटोला बुनाई वाले कपड़े तैयार किए जाते थे, जिसका विदेशों में निर्यात होता था। इसी तरह बारीक मलमल पर जामदानी बुनाई की जाती थी, जिस पर करघे से सजावटी डिजाइनें बनायी जाती थीं। आमतौर पर इसमें सूती और सोने के धागे का इस्तेमाल किया जाता था। ढाका तथा लखनऊ इस तरह के बुनाई के केन्द्र थे। इन कपड़ों को यूरोप में बड़े–बड़े घर के लोगों तथा रजवाड़े परिवार के लोगों द्वारा बहुत अधिक पसंद किया जाता था। इसलिए मंहगे होने के बावजूद भी इनकी मांगें विदेशों में अधिक थीं।

tkenkuh cukbl oky diM egx D;k gkr Fk\ bldk mi;kx flQ jtokM ifjokj d ykx gh D;k djr Fk\

भारतीय उत्पाद की बढ़ती हुई मांगों को देखकर सन् 1813 ई० में इंगलैंड की सरकार द्वारा 'मुक्त व्यापार की नीति' अपनायी गयी। अभी तक सिर्फ अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को ही भारत के साथ व्यापार करने का अधिकार था। 'मुक्त व्यापार की नीति' ने सभी अंग्रेजी उद्योगपतियों के लिए भारत में व्यापार करने की स्वंतत्रता प्रदान कर दी। इस नीति का सबसे

fp= 2 & iVkyk cukbZ dk ueuk

tkenkuh cukbZ dk ueuk

पहला प्रहार भारत के वस्त्र उद्योग पर हुआ। अब इंगलैंड के सूती वस्त्र उद्योग को विकसित करने के लिए भारतीय निर्माताओं के साथ आयात निर्यात करने में भेदभाव का सिलसिला शुरू किया गया। अंग्रेजी सरकार का यह उद्देश्य था कि ऐसे कानूनों को बनाया जाए, जिनके सहारे भारत से कच्चे माल का आसानी से निर्यात किया जा सके और तैयार माल को भारत में बेचा जा सके। मशीनों की वजह से अधिक उत्पादन होने लगा। अब वे इंगलैंड में ही नहीं, बल्कि भारत में भी बाजार खोजने लगे, ताकि उनके उत्पादित कपड़ों की खपत हो सके। अतः इंगलैंड के व्यापारी अब इंगलैड का कपड़ा लेकर भारत में बेचने के लिए आने लगे। इस समय तक इंगलैंड का उद्योग काफी उन्नति कर चुका था, जिससे भारत में भी सस्ते दामों के कारण मशीनों द्वारा बने हुए कपड़े बिकने लगे। मुक्त व्यापार की नीति एक तरफा नीति थी। भारत से जो सामान इंगलैंड जाता था, उस पर वहाँ आयात कर लगता था, लेकिन जो सामान भारत में आता था, उस पर कोई कर नहीं लगता था। इसलिए भारत में

eDr O;kikj dh uhfr%& bl uhfr d }kjk Hkkjrh; O;kikj ij diuh dk ,dkf/kdkj lekIr gk x;kA vc bxyM dk dkbZ Hkh O;fDr Hkkjr d lkFk Lo=r :i l O;kikj dj ldrk FkkA

इंगलैंड के सामान सस्ते दोमों पर उपलब्ध होते थे। परिणामस्वरूप भारतीय बुनकरों एवं सूत

कातने वालों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी।

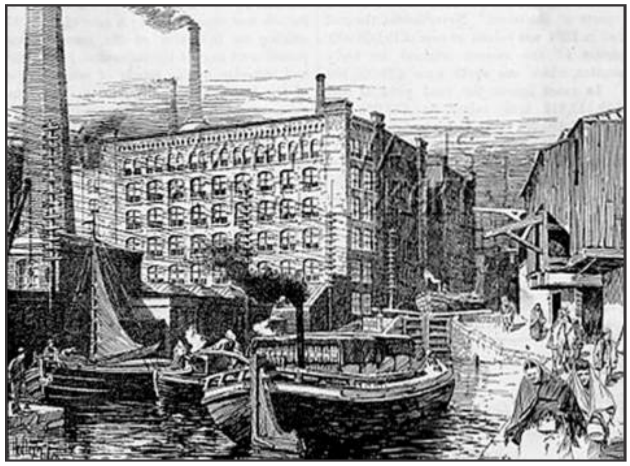

fp= 4 & bxyM dk lrh oL= dkj[kkuk

यधपि उन्नीसवीं शताब्दी में भारत द्वारा इंगलैंड को निर्यात की जानेवाली वस्तुओं में वृद्धि हुई, लेकिन यह वृद्धि सिर्फ कच्चे माल के रूप मे हुई। भारत को अब मजबूर किया जाने लगा कि वह उन चीजों का निर्यात करे जिनकी अंग्रेजी उद्योगों को आवश्यकता थी। जैसा कि अध्याय–3 में आपने पढ़ा है कि अंग्रेज कपास, नील, अफीम, जूट आदि जैसे कच्चे माल के उत्पादन को प्रोत्साहन देने लगे। वे किसानों से मनमाने दाम पर माल खरीदते थे और उन्हें अनाज की जगह नकदी फसल उपजाने को बाध्य करते थे। इंगलैंड में खाद्यान्न की भी कमी थी, अतः भारत से अनाज का भी निर्यात किया जाता था। यहाँ तक कि भारत में अकाल के समय भी अनाज का निर्यात किया जाता था। दूसरी तरफ कच्चा माल के लिए अधिक भूमि का उपयोग किए जाने से भी देश में खाद्यान्न की कमी होने लगी। अंग्रेजों का एकमात्र उद्देश्य यह था कि किसी तरह उनके उद्योगों को समाप्त करके अपना उद्योग विकसित किया जाय।

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों से भारतीय शिल्प एवं उद्योग का धीरे–धीरे पतन होने लगा। रेलवे के विकास ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंगलैड की वस्तुओं को पहुँचाना शुरू किया। अब हस्तशिल्प की वस्तुओं की कीमतें बढ़ गयीं और मशीन निर्मित चीजें बाजार में सस्ती मिलने लगीं। अंग्रेजी शासन से पहले कृषि, हस्त–शिल्प एवं कुटीर उद्योग का बहुत बढ़िया संतुलन था, लेकिन कुटीर उद्योग एवं हस्तशिल्प के विनाश ने इस संतुलन को नष्ट कर दिया। शिल्प एवं उद्योग में लगे हुए कारीगर अब शहर छोड़कर गाँवों में लौटने लगे और खेती करने को बाध्य हो गए। इस तरह इंगलैंड में मशीनों के आविष्कार एवं अंग्रेजों की भारत के प्रति व्यापारिक नीतियों ने भारत में निःऔद्योगिकिकरण (De-industrialisation) की स्थिति पैदा कर दी।

Developed by: SOL www.absol.in

कृषि पर दबाव बहुत बढ़ गया, जिससे भारत में बेरोजगारी और गरीबी की समस्या उत्पन्न हो गयी। इसे आप अध्याय–3 में विस्तृत रूप से पढ़ चुके हैं।

m|kx e: yx: g, Hkkjrh; dkjhxj m|kx dk NkM dj rjQ D;k ykV x,\

fu"vk|kfxfdj.k dk vFk gkrk g& tc n'k d: ykx f'kYi ,o m|kx dk NkMdj [krh dk viuh thfodk dk vk/kkj cuk yrA

इंगलैंड में जहाँ हथकरघा उद्योग के विनाश का स्थान नये मशीनी उद्योगों ने ले लिया, वहाँ भारत के दस्तकारों एवं बुनकरों के विनाश का स्थान किसी अन्य उद्योगों ने नहीं लिया। इसका प्रमुख कारण था– भारत में पूँजी की कमी, तकनीकी शिक्षा का अभाव, वैसे भारतीयों की कमी जो औद्योगिक विकास की भावना रखते हों तथा अंग्रेजों की मुक्त व्यापार की नीति। इसके बावजूद भी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कुछ भारतीय मशीनी उद्योग की स्थापना की तरफ आकर्षित हुए। सबसे पहले उन्होंने वस्त्र उद्योग की स्थापना की क्योंकि इसके कारखाने को खोलने के लिए कम पूँजी की आवश्यकता थी, उसके बाद जूट एवं कोयला खान उद्योगों की भी स्थापना की गयी।

सन् 1854 में बंबई में पहला सूती वस्त्र का कारखाना कावस जी नानाजी दाभार नामक एक पारसी व्यापारी ने स्थापित किया। सन् 1880 ई० तक पूरे भारत में 56 सूती कपड़ा मिलें स्थापित हो चुकी थीं। इन कारखानों के लिए मशीनें विदेशों से लायी जाती थीं। भारत में कपड़ा उद्योग की प्रगति ने विदेशों को चिंता में डाल दिया। फिर भी भारतीय उद्योगपतियों के सामने समस्या यह थी कि यदि किसी तरह अंग्रेजी सरकार भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने का कार्य करती, तो उत्पादन क्षमता में वृद्धि की जा सकती थी। अतः उन्होंने मांग की कि इंगलैंड से आ रहे कपड़ों पर सरकार विशेष कर लगाए ताकि वे भारत में यहाँ के बने हुए कपड़ों से मंहगा बिके। लेकिन अंग्रेजों ने ऐसी नीति नहीं अपनायी जिससे भारत का औद्योगिक विकास धीमा रहा।

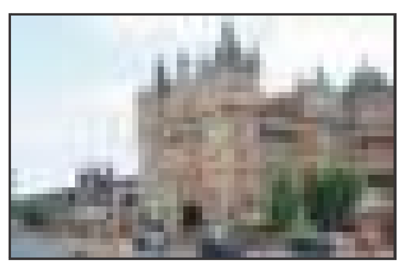

fp= 5 & ccbZ fLFkr lrh diMk fey

सन् 1855 ई० में बंगाल के रिशरा में पहली जूट मिल स्थापित की गयी। इसी तरह सन् 1906 में कोयला खान उद्योग की शुरुआत भी की गयी।

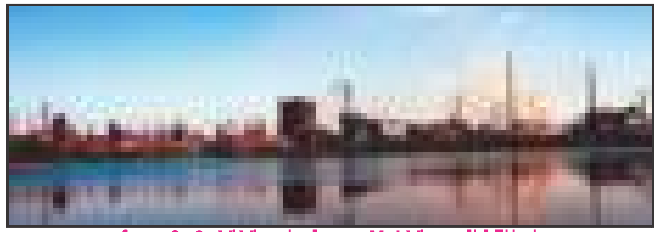

fp= 6 & VkVk vk;ju ,.M LVhy dkj[kkuk

बीसवीं शताब्दी में स्थापित महत्वपूर्ण उद्योग लौह उद्योग था। सन् 1907 में जमशेद जी टाटा के द्वारा तत्कालीन बिहार (झारखंड) के साकची नामक स्थान पर टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना की गयी। यही स्थान आज जमशेदपुर के नाम से जाना जाता है। यहाँ स्टील का उत्पादन होने लगा।

vxsth ljdkj u bxyM d diMk m|kx dk c<kok nu d fy, D;k fd;k\ Hkkjrh; m|kxifr;k dk ;g lfo/kk D;k ugh feyh\ Hkkjr e LVhy d mRiknu l Hkkjrh;k dk D;k ykHk feyk

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं शताब्दी के शुरुआत में भारत में कागज, चीनी, आटा आदि की मिलें भी खोली गयीं। यहाँ नमक, अभ्रक और शोरे जैसे खनिज उद्योगों की भी स्थापना हुयी। मशीनों पर आधारित उद्योगों के अलावे नील, चाय और कॉफी जैसे बगान उद्योग का भी विकास हुआ, जिसके विषय में आप अध्याय–3 में पढ़ चुके हैं। इन उद्योगों में विदेशी पूँजी का ही निवेश ज्यादा था। अंग्रेज मुनाफा कमाने के लिए भारतीय उद्योगों को अपनी पूँजी लगाकर प्रोत्साहन देना शुरू किए, ताकि उन उद्योगों पर उनका वर्चस्व बना रहे। अंग्रेजों ने बैंकों पर भी अपना प्रभाव जमा रखा था, जहाँ से उन्हें आसानी से कम ब्याज पर कर्ज मिल जाता था, जबकि भारतीयों को इसके लिए बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी और उन्हें ऊँचे दर पर ब्याज देना पड़ता था।

इस तरह भारत में औद्योगिक विकास का यह क्रम धीमी गति से बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक तक यों ही चलता रहा है लेकिन उसका तेजी से विकास सन् 1914 के बाद ही हो सका। 1945 ई० तक इंगलैंड को दो विश्वयुद्धों एवं कई आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस अवधि में इंगलैंड का पूरा ध्यान युद्ध सामग्री, यथा अस्त्र–शस्त्र निर्माण में

लगा रहा तथा मालवाहक जहाजों को युद्ध सामग्री ढोने के काम में लगा दिया गया। परिणामतः इंगलैंड से भारत में आने वाले सामानों में कमी होने लगी, जिससे भारत में उत्पादित वस्तुओं की बिक्री बढ़ गयी और उत्पादन पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा। इससे भारतीय उद्योगपतियों का लाभ बहुत बढ़ गया। अब सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि इंगलैंड तथा यूरोप के अन्य देशों में भारत में निर्मित वस्त्रों की मांग बढ़ गयी, जिसकी वजह से उसकी कीमत में पाँच गुना तक की बढ़ोतरी हो गयी। इन दो विश्वयुद्धों के बीच भारतीय उद्योगों को काफी बढ़ावा मिला, विशेषकर कपड़ा उद्योग काफी विकसित हुआ।

इस तरह भारत में औद्योगिक विकास का एक नया दौर शुरू हुआ। परिणाम स्वरूप समाज में दो नये सामाजिक वर्गों का उदय हुआ– औद्योगिक पूँजीपति वर्ग और आधुनिक मजदूर वर्ग।

औद्योगिक पूँजीपति वर्ग वे थे, जो भारतीय उद्योग में अपना पूँजी निवेश करते थे। सन् 1920 के बाद विदेशी पूँजी निवेश में कमी होने लगी। इस काल में हो रहे औद्योगिक विकास ने भारतीयों को पूँजी निवेश के लिए प्रेरित किया और यहाँ के पूँजीपतियों ने विदेशी कंपनियों से सूती कपड़ा एवं इस्पात उद्योग के क्षेत्र में विदेशी कंपनियों को खरीदकर भारत का औद्योगिक विकास किया।

सन् 1920 के दशक से ही जी०डी० बिड़ला भारतीय उद्योगपतियों का एक संघ बनाना चाहते थे। इस उद्देश्य से सन् 1927 में 'फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री **(FICCI)** की स्थापना की गयी। यह पूरे भारत में व्यापारिक हितों के लिए काम करने वाली व्यापारिक संस्था बन गयी।

f'kYi ,oa m|ksx rFkk etnwjksa dk thou%& सन् 1850 ई० के बाद से भारत में मशीनों वाले उद्योग खोले जाने लगे थे। सबसे बड़ा उद्योग कपड़ा बनाने और सूत कातने का उद्योग था, जिसमें सबसे ज्यादा मजदूर काम करते थे। दूसरा था जूट उद्योग और तीसरा कोयला उद्योग।

e'khu m|ksx ds 'kq: gksus ls iwoZ Hkkjr esa fdl rjg dk m|ksx Fkk

e'khuh m|ksx dh vko';drk Hkkjrh;ksa dks D;ksa iM+h

भारत में सूती कपड़ा उद्योग का मुख्य केन्द्र बंबई था, जूट और चाय उद्योग का मुख्य केन्द्र बंगाल था। यहाँ श्रमिकों की संख्या भारत में सबसे अधिक थी। उनके रहने और कार्य करने की परिस्थितियाँ बहुत शोचनीय थीं। वे एक दिन में 15–16 घंटे से लेकर 18 घंट तक काम करते थे। अवकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी। उनके रहने की जगह भी अच्छी नहीं होती थी। वे कारखानों के बगल में ही स्थित छोटी–छोटी झुग्गी झोपड़ियों में रहते थे, जहाँ सफाई एवं पानी की कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

fp= 7 & dk;yk [knku esa dke djrk Jfed

fp= 8 & etnjksa dk vkokl

मजदूरों को समय पर वेतन का भी भुगतान नहीं होता था। अगर मशीन खराब हो जाय या माल कम तैयार हो तो इसमें मजदूरों की कोई गलती नहीं होती थी, फिर भी मालिक उनके वेतन से कटौती कर लेता था। इतना ही नहीं यदि मजदूर की तबियत खराब हो जाती थी, तो उसकी चिकित्सा की व्यवस्था करना तो दूर, उस दिन काम पर नहीं आने के कारण उसके वेतन में कटौती कर ली जाती थी।

कोयला खदानों के मजदूरों की दशा तो और भी दयनीय थी। झरिया और गिरीडीह के कोयला खानों के श्रमिकों के काम के घंटे प्रातः 6 बजे से शाम 6 बजे तक थे। स्त्रियाँ एवं बच्चे भी भूमिगत खानों में काम करते थे। वहाँ प्रायः दुर्घटनाएँ हुआ करती थीं। यद्यपि सन् 1923 के बाद सरकार ने दुर्घटना बीमा योजना की शुरुआत कर दी थी, लेकिन मुआवजे की राशि लेने के लिए बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी।

इतना हीं नहीं स्त्री–पुरुष एवं बच्चों को गर्मी में 14 घंटों एवं जाड़ा में 12 घंटों तक काम

करना पड़ता था। एक तरफ काम का बोझ होता था, दूसरी तरफ रोजगार की कोई सुरक्षा नहीं होती थी। ऐसी परिस्थिति में मजदूरों के पास संगठन बनाने एवं अपनी मांगों को सरकार के समक्ष रखने के अलावे कोई उपाय नहीं था। लेकिन इससे उसकी नौकरी चले जाने का भय था। सन् 1880 में बिजली के बल्ब के लग जाने से काम के घंटे में और वृद्धि होने लगी। अतः मजदूरों ने अब उद्योगपतियों के खिलाफ जगह–जगह पर विरोध प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। उनकी प्रमुख प्रारंभिक मांगें थीं– काम के घंटों में कमी, साप्ताहिक अवकाश और कारखानों में काम के दौरान घायल हुए श्रमिकों को मुआवजा। भारतीय उद्योगपतियों को उनकी मांगें उचित नहीं लगीं, क्योंकि काम के घंटे कम होने से उत्पादन में कमी हो जाती, मालिकों का खर्च बढ़ जाता और कारखानों में बनी वस्तुओं का दाम बढ़ जाता। ऐसी स्थिति में इंगलैंड की बनी वस्तुएँ सस्ती और भारत में बनी वस्तुएँ महंगी हो जातीं और भारतीय उद्योग का विकास धीमा पड़ जाता।

fp= 9 & Jfedk dk thou

उस समय इंगलैंड के उद्योगपतियों ने भारतीय मजदूरों का साथ दिया। अतः अंग्रेजी सरकार ने सन् 1881 एवं उसके बाद के समय में मजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए कई नियम बनाए, जिनसे स्त्री–पुरुष एवं बाल मजदूरों के काम करने के घंटे तथा उनकी दैनिक मजदूरी तय की गयी। फिर भी अभी मजदूरों की स्थिति दयनीय ही बनी रही। आवश्यक सुविधा प्राप्त करने के लिए मजदूरों ने हड़ताल करना आरंभ कर दिया। सन् 1920 तक देशभर में कई हड़तालें हुयीं। इससे पूर देश के मजदूरों में एकता की भावना भी आयी, जिससे प्रेरित होकर सन् 1920 में ही मजदूरों ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस **(AITUC)** नामक संगठन बनाया, जो मजदूरों के हितों की रक्षा करने वाली संस्था बनी। आगे चलकर यही मजदूर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत बनाने में भी सहायक रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने उनके लिए 'न्यूनतम मजदूरी कानून' बनाकर मजदूरी दरों को निश्चित किया तथा उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील रही।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार भारत के शिल्प एवं उद्योग के विकास के लिए भी सतत् प्रयत्नशील रही। एक 'औद्योगिक नीति' बनायी गयी जिसके द्वारा कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए भी कारगर कदम उठाए गए।

vH;kl

vkb, ;kn djs&

1- lgh fodYi dk puA

(i) **vBkjgoh 'krkCnh e Hkkjr dk ie[k m|kx fuEufyf[kr e l dku Fkk**

(क) वस्त्र उद्योग (ख) कोयला उद्योग (ग) लौह उद्योग (घ) जूट उद्योग

(ii) **QMj'ku vkQ bfM;u pEcl vkQ&dkel ,.M bMLVh (FICCI) dh LFkkiuk dc gbl**

(क) सन् 1920 में (ख) सन् 1927 में (ग) सन् 1938 में (घ) सन् 1948 में

(iii) **tV m|kx dk çe[k dUæ dgk Fkk**

(क) गुजरात (ख) आंध्रप्रदेश (ग) बंगाल (घ) महाराष्ट्र

(iv) **lu 1818 e vxth ljdkj u fdl mís'; l etnjk d fy, fu;e cuk,**

(क) मजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए (ख) अधिक उत्पादन के लिए

(ग) प्रशासनिक सुविधा के लिए (घ) अपने आर्थिक लाभ के लिए

(v) **vkly bfM:k VM :fu:u dkxl (AITUC) dh LFkkiuk dc gbl**

(क) 1818 में (ख) 1920 में (ग) 1938 में (घ) 1947 में

fuEufyf[kr d tkM cuk,A

(क)	जूट उद्योग	(क)	लखनऊ
(ख)	ऊनी वस्त्र उद्योग	(ख)	बंगाल
(ग)	जामदानी बुनाई	(ग)	चम्पारण
(घ)	लौह उद्योग	(घ)	कश्मीर
(ङ)	नील बगान उद्योग	(ङ)	जमशेदपुर

vkb, fopkj dj&

(i) कैलिको अधिनियम के क्या उद्देश्य थे?

(ii) मुक्त व्यापार की नीति से आप क्या समझते हैं?

(iii) भारतीय उद्योगपतियों को भारत में उद्योग की स्थापना के मार्ग में क्या–क्या बाधाएँ थीं?

(iv) मजदूरों के हित में पहली बार कब नियम बनाया गया? उन नियमों का मजदूरों पर क्या प्रभाव पड़ा?

(v) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने मजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए कौन से कदम उठाए?

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

vkb, djd n[k&

(i) अठारहवीं शताब्दी के भारत के मानचित्र को देखकर यह बताएँ कि कौन सा राज्य सूती कपड़ा उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र था?

(ii) इस पाठ के आधार पर यह बताएँ कि मजदूरों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

Developed by: ABSOL www.absol.in